بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ    نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ    وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-31.05.2024 محلہ احمدیہ قادیان۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

# हज़रत ख़ुबैब रज़ीयल्लाहु अन्हु की शहादत वाली घटना का बयान तथा विभिन्न देशों में पीड़ितों के लिए दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा **31 मई 2024**. स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- एक सिरये के वर्णन में हज़रत ख़ुबैब रज़ी. के शहीद किए जाने का वर्णन हो रहा था, उसके विस्तृत विवरण में लिखा है कि यह पहले सहाबी थे जिन्हें लकड़ी से बाँध कर शहीद किया गया अर्थात सलीब की भांति लटका कर शहीद किया गया।

अल्लामा इब्ने असीर लिखते हैं कि हज़रत ख़ुबैब रज़ी. पहले सहाबी थे जो अल्लाह की राह में सलीब दिए गए। शहादत क समय क़ुरैश ने हज़रत ख़ुबैब रज़ी. को इस्लाम से पलट जाने की स्थिति में छोड़ दिए जाने का प्रस्ताव दिया था परन्तु हज़रत ख़ुबैब रज़ी. ने फ़रमाया कि इस्लाम की राह में मेरा शहीद किया जाना तो कोई विशेष बात नहीं है।

फिर अल्लाह स इस तरह बात करने लगे कि ऐ अल्लाह! यहाँ कोई ऐसा नहीं जो तेरे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक मेरा सलाम पहुंचाए, अतएव तू स्वयं मेरा सलाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचा दे तथा जो कुछ हमारे साथ हुआ वह आप स. को बता दे। हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ी. से रिवायत है कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबियों के संग बैठे हुए थे कि आप स. पर वह्यी के संकेत प्रकट होना शुरु हुए और आप स. ने फ़रमाया- वअलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह। अर्थात- उस पर भी सलामतो तथा रहमतें एवं बरकतें हों। फिर जब यह अवस्था समाप्त हुई तो आप स. ने फ़रमाया कि ये जिब्रईल थे जो मुझे ख़ुबैब रज़ी. का सलाम पहुंचा रहे थे। ख़ुबैब को क़ुरैश ने मार डाला।

रिवायत है कि क़ुरैश ने ऐसे चालीस आदमियों को हज़रत ख़ुबैब रज़ी. की हत्या के समय बुलाया जिनके बाप दादा बदर की लड़ाई में मारे गए थे, फिर क़ुरैश के उन लोगों में से हर एक को एक एक भाला देकर कहा कि यही वह व्यक्ति है जिसने तुम्हारे बाप दादा को हत्या की थी तो उन लोगों ने खुबैब रज़ी. को अपने भालों से धीरे धीरे मारना शुरु किया। इस पर हज़रत ख़ुबैब रज़ी. सलीब पर व्याकुल होने लगे, फिर ख़ुबैब पलटे तो उनका चेहरा कअबे की ओर हो गया। उन्होंने कहा कि समस्त महिमा अल्लाह के लिए है जिसने मेरे चेहरे को अपने क़िबले की ओर कर लिया जो उसने अपने लिए पसन्द किया है। फिर मुशरिकों ने ख़ुबैब रज़ी. को मार डाला। इससे पता चलता है कि मुशरिकों ने पहले हज़रत ख़ुबैब रज़ी. को भाले चुभोए, घोर पीड़ा दी तथा फिर हत्या की।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि क़ुरैश के रईसों की दिली शत्रुता के सामने दया एवं न्याय की भावना का कोई सवाल ही नहीं था। अतएव अभी अधिक दिन नहीं बीते थे कि बनू हारिस के लोग तथा अन्य क़ुरैश के सरदार हज़रत ख़ुबैब रज़ी. की हत्या करने तथा उनके वध पर समारोह मनाने के लिए उन्हें एक खुले मैदान में ले गए। आप रज़ी. ने मरने से पहले दो नफ़ल अदा करने की अनुमति चाही, फिर तल्लीन होकर नफ़ल अदा किए और कहा कि मेरा दिल तो चाहता था कि नमाज़ को लम्बा करूँ परन्तु फिर मुझे लगा कि तुम लोग यह न समझो कि मैं मौत को पीछे डालने के लिए नमाज़ को लम्बा कर रहा हूँ। फिर ख़ुबैब रज़ी. ये काव्य पंक्तियाँ पढ़ते हुए आगे झुक गए।

अर्थात- जबकि मैं इस्लाम की राह में तथा मुसलमान होने की अवस्था में मारा जा रहा हूँ तो मुझे यह चिंता नहीं कि मैं वध होकर किस करवट पर गिरूँ। यह सब कुछ ख़ुदा के लिए है तथा यदि मेरा ख़ुदा चाहेगा तो मेरे शरीर क कण कण टुकड़ों पर बरकतें नाज़िल फ़रमाएगा।

हज़रत ख़ुबैब रज़ी. ने शहादत के समय दुआ की थी कि ऐ ख़ुदा! इन दुष्टों का चुन चुन कर विनाश कर। अतएव रिवायतों में आता है कि अभी एक साल भी न बीता था कि इस हत्या में शामिल समस्त अत्याचारी नष्ट हो गए। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह तो साबित नहीं है, अन्य स्थानों पर यह नहीं मिलता कि एक साल अभी पूरा न हुआ था और ये सारे लोगां नष्ट हो गए। हाँ, यह कहा जा सकता है कि उनमें से अधिकांश लोग मारे गए अथवा मक्का के विजय होने तक उन्होंने इस्लाम क़बूल कर लिया। एक जीवन परिचय का लेखक इस संदर्भ में लिखता है कि ख़ुबैब की ज़बान से मुशरिक ये वाक्य सुन कर कांप उठे, उन्हें विश्वास था कि ख़ुबैब रज़ी. की यह दुआ व्यर्थ नहीं जाएगी, क़ुरैश के लोगों में इस बद्दुआ का बड़ा चर्चा रहा। एक महीने अथवा इससे अधिक अवधि तक उनकी सभाओं में ख़ुबैब रज़ी. की बद्दुआ का भय मंडराता रहा तथा वे इस पर भांत भांत की टिप्पणियाँ करते रहे।

जिस समूह ने हज़रत ख़ुबैब रज़ी. को शहीद किया था उनमें एक व्यक्ति सईद बिन आमिर नामक भी था। यह व्यक्ति बाद में मुसलमान हो गया और हज़रत उमर रज़ी. की ख़िलाफ़त के समय तक उसका यह हाल था कि जब उसे हज़रत ख़ुबैब रज़ी. की शहादत की घटना याद आती तो वह मूर्छित हो जाता। हज़रत उमर रज़ी. ने सईद को शाम देश में एक स्थान पर कार्यकर्ता नियुक्त फ़रमाया था तथा उनका यह हाल था कि

लोगों के बीच में भी यदि इस घटना की चर्चा होती तो उन पर बेहोशी का दौरा पड़ जाता। लोगों ने इसके विषय में हज़रत उमर रज़ी. से कहा कि आपने हम पर एक बीमार व्यक्ति को अमीर नियुक्त फ़रमाया है। जब सईद बिन आमिर हज़रत उमर रज़ी. से मिलने के लिए आए तो आप रज़ी. ने उनसे पूछा कि ऐ सईद, तुझे कोई बीमारी हो गई है? सईद बिन आमिर ने जवाब दिया कि नहीं, मुझ कोई रोग नहीं हुआ है, बात केवल इतनी है कि जिस समय ख़ुबैब को मारा जा रहा था, मैं भी वहाँ मौजूद था और अब जब भी मुझे हज़रत ख़ुबैब रज़ी. की वह दुआ याद आती है तो मुझ पर बेहोशी छा जाती है।

क़ुरैश ने हज़रत ख़ुबैब क शव को सलीब पर ही लटका हुआ छोड़ दिया था ताकि वह गल सड़ जाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ुबैब रज़ी. के शव को सूली से उतारने के लिए प्रेरित करते हुए फ़रमाया कि तुममें से कौन ख़ुबैब के शव को सूली से उतारेगा। इस पर हज़रत जुबैर बिन अव्वाम रज़ी. ने कहा कि मैं तथा मेरा साथी मिक़दाद बिन असवद रज़ी. या रसूलुल्लाह। जब ये दोनों शव के पास पहुंचे तो वहाँ उन्होंने चालीस आदमियों को पाया परन्तु वे सब के सब मूर्छित होकर सोए हुए थे। इन दोनों ने हज़रत ख़ुबैब रज़ी. को उतार लिया तथा यह हज़रत ख़ुबैब रज़ी. की शहादत के चालीस दिन बाद की घटना है।

सीरत की किताबों में वर्णित रिवायतों में हज़रत ख़ुबैब रज़ी. के शव को लाने के लिए कुछ अन्य लोगों का भी वर्णन मिलता है। अतएव एक रिवायत के अनुसार आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमरू बिन उमय्या रज़ी. को एकेले इस काम के लिए रवाना फ़रमाया था। एक रिवायत में हज़रत उमरू बिन उमय्या रज़ी. के साथ हज़रत जब्बार बिन सख़रा अन्सारी रज़ी. का नाम भी आता है। वे रिवायत करते हैं कि हमने शव को सूली से उतार लिया, तथा जब क़ुरैश ने हमारा पीछा किया तो मैंने हज़रत ख़ुबैब के शव को नदी में फेंक दिया। इस प्रकार अल्लाह तआला ने हज़रत ख़ुबैब रज़ी. के शव को काफ़िरों से गुप्त कर दिया। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इस तरह अल्लाह तआला ने उनके शव को अपमान से सुरक्षित रखा, काफ़िर जो कुछ करना चाहते थे वे न कर सके। अल्लाह तआला इस तरह भी अपने प्यारों की रक्षा करता था। अनेक ऐसे अवसर हैं जहाँ अल्लाह तआला ने शवों को दुशमन के शर से सुरक्षित रखा। पिछली बार भी मैंने एक घटना बयान की थी जहाँ भिड़ां तथा मधु मक्खियों के द्वारा अल्लाह तआला ने शव को सुरक्षित रखा तथा अपमान नहीं हो सका।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इस सिरये का वर्णन यहाँ पूरा हो गया, तथा फ़रमाया कि मैं दुआ की ओर ध्यान दिलाता रहता हूँ। फ़लिस्तीनियों के लिए दुआ करें, अब तो अति सीमा हो गई है। रफ़ा के बारे में पहले अमरीका कहता था कि यह हमारी रैड लाईन होगी, अब कहते हैं नहीं! अभी समाप्त नहीं हुई, पता नहीं इनकी रैड लाईन की सीमा क्या है? कितने लाख आदमियों को इन्होंने मारना है फिर हिल जुल पैदा होगी। अल्लाह तआला इन अत्याचारियों से दुनिया को मुक्ति दे तथा पीड़ित फ़लिस्तीनियों को भी मुक्ति दे, आमीन।

इसी तरह सूडान के लोगों के लिए भी दुआ करें। वहाँ तो स्वयं अपनी ही क़ौम के लोग, मुसलमान मुसलमान को मार रहे हैं। अल्लाह तआला उनको भी बुद्धि दे, अल्लाह तआला की पकड़ से बचने वाले हों, उसके आदेशानुसार कर्म करने वाले हों। यमन के बन्दियों के लिए दुआ करें, पाकिस्तानी अहमदियों के लिए भी दुआ करें, वहाँ भी स्थिति ऊपर नीचे होती रहती है। ईद निकट आ रही है, इन दिनों में मौलवी और अधिक सक्रिय हो जाते हैं। अल्लाह तआला हर अहमदी को हर एक दुष्टता से सुरक्षित रखे, बन्दियों की रिहाई के भी जल्दी साधन पैदा फ़रमाए, आमीन।

ख़ुत्बः के अगले भाग में हुज़ूरे अनवर ने दो मृतकों का सद्वर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

1- चौधरी मुनीर अहमद साहब मुरब्बी सिलसिला, डाईरैक्टर एम.टी.ए. इन्टर नैशनल, टेली पोर्ट, अमरीका। पिछले दिनों 73 वर्ष की आयु म इनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम को 1981 से 1990 तक तथा फिर 1994 से अन्तिम समय तक अमरीका में जमाअत की सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। एम.टी.ए. टेली पोर्ट अमरीका की स्थापना में आपने विशेष भूमिका निभाई। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि कड़े परिश्रम तथा मन लगा कर काम करने वाले थे, तकनीकी बातों को भी स्वयं प्रयास करके सीखा तथा अति निपुणता के साथ सब काम चलाया। मरहूम दुआ करने वाले, ख़िलाफ़त से सम्बंध रखने वाले, मेहमान नवाज़ व्यक्तित्व के मालिक थे। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आप वाक़िफ़े ज़िन्दगी का एक उदाहरण थे।

2- मुकर्रम अब्दुर्रहमान कुटटी साहब ऑफ़ केरला, पिछले दिनों इनका निधन हुआ है। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम मूसी थे, सोलह वर्ष की आयु में इन्होंने बैअत करने की तौफ़ीक़ पाई। मरहूम सौम व सलात के पाबन्द, जमाअत के साथ निष्ठा का सम्बंध रखने वाले, सरल स्वभाव के मालिक, विनम्र एवं नेक इंसान थे। मरहूम के एक बेटे मुकर्रम शमसुद्दीन माला बारी साहब कबाबीर के मुबल्लिग़ सिलसिला हैं जो जनाज़े में शामिल नहीं हो सके थे। हुज़ूरे अनवर ने मृतकों की मग़फ़िरत एवं दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

**हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652**

**टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131**